23.05.2020

System Analysis - Meaning

पद्धति का प्रयोग जब राजनीति विज्ञान में किया गया तो इसे राजनीतिक व्यवस्था का नाम दिया गया। राजनीतिक व्यवस्था या पद्धति का अभिप्राय यह है कि यहाँ राजनीतिक प्रश्नों का हल खोजने का प्रयास किया जाता है। व्यवस्था शब्द भौतिक विज्ञानों से लिया गया है। भौतिक विज्ञानों के अन्तर्गत व्यवस्था का अर्थ सुपरिभाषित अन्तर्क्रियाओं के ऐसे समूह से है जिसकी सीमाएँ निश्चित की जा सकें। ~~शाब्दिक~~ इसलिए ~~परिभाषा का अर्थ~~ है शब्द के आधार पर व्याख्या करने से स्पष्ट होता है कि व्यवस्था का अर्थ है - जटिल सम्बन्धित वस्तुओं का समग्र समूह विधि संगठन, पद्धति के निश्चित सिद्धान्त तथा वर्गीकरण का सिद्धान्त।

उपरोक्त अर्थ से स्पष्ट होता है कि एक व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो संगठित हो। उसमें ऐसा संगठन होना चाहिए कि वह पूरी तरह एकताबद्ध हो और उसके सभी अंग एक दूसरे से सम्बद्ध हों। यदि किसी स्थान पर हमें संगठन मिलता है अथवा जहाँ से संगठित होने के गुण पाए जाते हैं और उसके सभी अंग एक दूसरे से सम्बद्ध हैं तो यह माना जा सकता है कि वहाँ व्यवस्था विद्यमान है। इसीलिए इसकी तुलना शरीर से की जाती है क्योंकि एक शरीर में ये सारे गुण एक ~~साथ~~ साथ पाए जाते हैं। सामान्यतः व्यवस्था में तीन गुण पाए जाते हैं—

1. व्यापकता - व्यवस्था का अर्थ है कि इसके अन्तर्गत राजनीति वैज्ञानिक सभी परस्पर क्रियाओं को शामिल करते हैं। परस्पर क्रियाओं से निष्कर्ष निकलता है कि इसमें न केवल उन अंगों को ~~कि~~ शामिल किया जाता है जो विधि पर आधारित हैं जैसे - विधायिका, कार्यपालिका या न्यायपालिका द्वारा किए जानेवाले कार्य बल्कि समस्त संस्थाओं को उनके राजनीतिक रूप में शामिल किया जाता है जैसे - जाति, धर्म परिवार आदि।

2. अन्योन्याश्रय - जिस प्रकार शरीर के एक अंग का दूसरे अंग से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध होता है, उसी प्रकार व्यवस्था के सभी अंग भी एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं। शरीर के एक अंग में यदि कोई पीड़ा होती है तो शरीर का दूसरा अंग भी उससे प्रभावित होता है। यों कहा जाय कि सम्पूर्ण शरीर प्रभावित होता है। इसी प्रकार व्यवस्था के एक अंग के गुणों में परिवर्तन आता है तो उसका प्रभाव अन्य अंगों पर भी स्वभावतः पड़ता है। इसका सीधा अर्थ है कि यदि विधायी अंग ठीक ढंग से कार्य नहीं करे तो कार्यपालिका और न्यायपालिका उससे प्रभावित हो जाता है ~~इतना~~ इतना ही नहीं उससे राजनीतिक दल, हित समूह आदि भी प्रभावित होते हैं।

3. सीमाएँ - राजनीति वैज्ञानिक सीमाओं का तात्पर्य लगाते हैं कि प्रत्येक व्यवस्था किसी एक बिन्दु से

Scanned with CamScanner

कि इसके अन्तर्गत
...ाओं को शामिल
...र्थ निकलता है
...शामिल किया
...-विद्यार्थियों,
...किए जाने वाले
...राजनीतिक
...ति, धर्म
...क अंग का
...ता है, उसी
...से
...में यदि
...सरा अंग
...जाय कि
...र व्यवस्था
...है तो
...वत:
...यायी
...लिक
...है
...,

प्रारम्भ होती है तथा किसी एक निश्चित स्थान पर उसका अन्त होता है। इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि ऐसे बिन्दु जहाँ पर अन्य व्यवस्थाओं की परिधि समाप्त होती है और राजनीतिक व्यवस्था की परिधि प्रारम्भ होती है, उसे राजनीतिक व्यवस्था की सीमा कहा जाता है।

जिसका निर्माण समाज स्वयं एक व्यवस्था है राजनीतिक व्यवस्था के अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाओं जैसे - आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि व्यवस्थाओं से होती है। ये सभी व्यवस्थाएं एक दूसरे से प्रभावित होती हैं और सभी एक दूसरे को प्रभावित भी करती हैं। राजनीतिक व्यवस्था अन्य व्यवस्थाओं से अलग और पूर्ण नहीं है। हर व्यक्ति एक ही दिन में कई प्रकार के कार्य करता है। अन्य कार्यों की तरह वह राजनीतिक कार्य भी करता है। ऐसी स्थिति में यह सम्भव ही नहीं है कि उसके राजनीतिक क्रियाओं पर अन्य कार्यों का प्रभाव नहीं पड़े। ऐसी परिस्थितियों का अध्ययन करने हेतु ही राजनीतिक समाजशास्त्र जैसे विषय का जन्म हुआ। इस विषय के विचारक यह मानते थे कि मनुष्य के राजनीतिक क्रियाकलाप समाज से प्रभावित होते हैं और दूसरी तरफ समाज भी राजनीति से प्रभावित होता है। राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र एकांगी अध्ययन करते थे। राजनीति पर

समाज के पड़नेवाले प्रभावों का अध्ययन नहीं
होता था दूसरी तरफ समाज पर कैसे राजनीति
प्रभाव डालता है, इसका अध्ययन समाजशास्त्र
में नहीं किया जाता था इन दोनों के अन्तर्क्रियाओं
के अध्ययन के लिए ही यह विषय बनाया गया।
राजनीति एवं समाज की तरह मनुष्य की
अन्य क्रियाएं भी दूसरी क्रियाओं पर प्रभाव
डालती हैं और पद्धति विश्लेषण इन्हीं अन्तर्क्रियाओं
का अध्ययन करता है। राजनीतिक व्यवस्था
के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यह मानवीय
सम्बन्धों का स्वरूप है। किसी भी मानवीय
सम्बन्धों की संरचना 'राजनीतिक व्यवस्था'
बन जाती है यदि उसके अन्तर्गत शक्ति,
नियम और सत्ता के तत्व दृष्टिगोचर होने
लगते हैं।

Scanned with CamScanner

माह = मई 2020

मौदहा कॉलेज, मौदहा

शिक्षक का नाम = डा० विश्वनाथ तिवारी, अतिथि शिक्षक, समकालीन राजनीतिक समस्याओं के लिए   विषय = राजनीति विज्ञान

दिनांक	पाली	समय	कक्षा का नाम	कक्षा से	कुल घंटे	पढ़ाने का शीर्षक एवं पाठ्यक्रम में प्र.प. का नाम		अभ्युक्ति	
02.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Scientific Social Research - Meaning, Nature	Paper - 11	PDF	
04.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Characteristics - Scientific Social Research	Paper - 11	PDF	
05.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Demerits of Scientific Social Research	Paper - 11	PDF	
08.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Importance - Scientific Social Research	Paper - 11	PDF	
09.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Problem Formulation in Research - Meaning, characteristics	Paper - 11	PDF	
11.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Kinds of Research Problem	Paper - 11	PDF	
12.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Sources of Research Problem	Paper - 11	PDF	
13.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Problem formulation - Evaluation	Paper - 11	PDF	
14.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Scientific Social Research - Stages	Paper - 11	PDF	
15.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Objectivity - Meaning, characteristics	Paper - 11	PDF	
16.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Objectivity - Problem to achieve	Paper - 11	PDF	
18.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	objectivity - means of achievement	Paper - 11	PDF	
19.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	System Analysis - Introduction.	Paper - X	PDF	
20.05.2020		On line	M.A. Sem - III		02	Causes for Research - System Analysis	Paper - X	PDF.	

Total (28) Twenty two

[signature] 23/05/2020
विभागाध्यक्ष

[signature] 23/05/2020
शिक्षक

प्राचार्य

माह - मई 2020

गोड्डा कॉलेज, गोड्डा

शिक्षक का नाम - डा० विश्वनाथ तिवारी, अतिथि शिक्षक   विषय - राजनीति विज्ञान

स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिए

तिथि	घंटी	समय	वर्ग का नाम	कक्षा सं.	कुल वर्ग	पढ़ाने का शीर्षक एवं पाठ्यक्रम में सत्र का नाम	अभ्युक्ति	
23.05.2020		On line	M.A. Sem-III		02	Meaning of System Analysis Paper-X	PDF	

28 + 02 = 30
Thirty classes
23/05/2020

प्राचार्य

विभागाध्यक्ष 23/05/2020

23/05/2020
शिक्षक

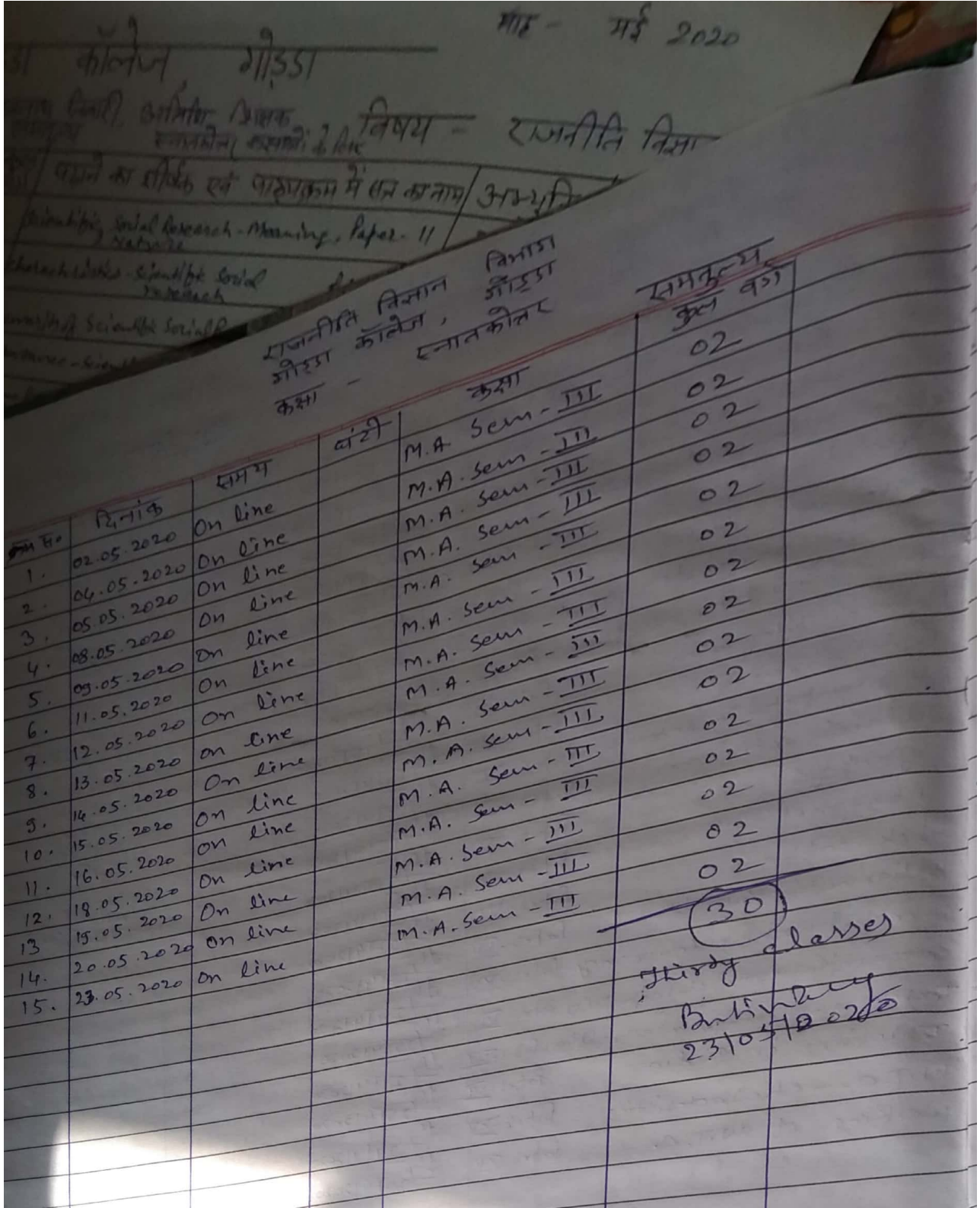

माह - मई 2020

...कॉलेज, गोंडा

...विषय - राजनीति विज्ञान

पढ़ाने का तिथि एवं पाठ्यक्रम में सत्र का नाम	अनुपस्थि...
...Social Research - Meaning, Paper - II ...	
... Scientific Social Research	

राजनीति विज्ञान विभाग
गोंडा कॉलेज, गोंडा
कक्षा - स्नातकोत्तर

क्रम सं०	दिनांक	समय	वंटी	कक्षा	समतुल्य कुल वर्ग
1.	02.05.2020	On line		M.A Sem - III	02
2.	04.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
3.	05.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
4.	08.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
5.	09.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
6.	11.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
7.	12.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
8.	13.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
9.	14.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
10.	15.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
11.	16.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
12.	18.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
13	19.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
14.	20.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02
15.	23.05.2020	On line		M.A. Sem - III	02

(30) Thirty classes

Brijendra[?]
23/05/2020